158 P
637
M

19-1
891.431
Si64R

राष्ट्रीय आल्हा

लेखक व प्रकाशक

चुन्नो गुरू का शिष्य पितम्बरलाल सिंहल

नई सड़क कोयले वालों में कानपुर

द्वतीयवार १००० मूल्य

बिना मोहर की पुस्तक चोरी की समझी जायगी

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931

ओ३म्

राष्ट्रीय आल्हा

सुमिरन करिके भारत माता औ गुरुचरणन शीश नवाय ।
आल्हा गाऊं कांग्रेस वाला याको सुनियो कान लगाय ॥
भई कांग्रेस गढ़ लाहौर में राजा भये जवाहरलाल ।
सन उनतीस महीना बारा तारीख ३१ पड़गई आय ॥
चर्चा छिड़गया जब स्वराज्य का बैठे वीर सभी दरबार ।
मुछ मरोड़ के योधा गर्जैं कायर मन में गये घबड़ाय ॥
केलकर जिन्ना उठकर बोले दादा विनती सुनो हमार ।
एक समैया देव इरविन को मालवी दीन्हो हांथ उठाय ॥
होइगा वोटिंग पहीश्चात में कायर बहुत गये खिसियाय ।
तारीख पहिली के लगते ही जुड़ गयो फेर सभी दरबार ॥
सिंह की बैठक नेहरू बैठे हिरदे धरे शांति तलवार ।
वोटिंग होइ गया सेनापति को गाँधी चुने सभी सरदार ॥
श्री प्रकास जी मंत्री होयगये खजानची जमुना लाल बजाज ।
यहां कि बाते यहीं पे रहगईं अब आगे के सुनो हवाल ॥
हफ्ता दो के ही बीतत खन नेहरू काढ़ दीन फरमान ।
तारीख २६ शुभ दिन हैगा घर घर झण्डा लेव लगाय ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 637
Date 15.12.71
GOVT. OF INDIA

सुनत हुक्म के झंडा लग गये चहुँदिशि दीपक धरे जगाय
मास एक लौ सोच समझ के गांधी नोटिस दियो पठाय ॥
दोस्त हमारे तुम इरविन हो मानो ११ शर्त हमार ।
देव हटाय नोन को चुंगी औ भूमि कर देव घटाय ॥
खर्च घटाय देव फौजन का तनखा बड़े अफसरन क्यार ।
कैद से छोड़ो बन्धु हमारे जो तुम डारौ बिन अपराध ॥
पुलिस हटाय दो खुफिया की त्यागो सट्टे का व्योपार ।
बिना लैसंस के तमंचा राखो सब शस्त्रन पर जोर हमार ॥
माल विलायत है जो आवत तापर डिउटी देव बढ़ाय ।
एकसौ चौबिस दफा हटाओ बाकी वंस नष्ट हो जाय ॥
दलित अछूतो जितने हैंगे सो सब करें भारती लाल ।
लिख परवाना चुक गांधी तब धावन को लियो बुलाय ॥
पाती देके फिर धावन को सगरी बात कही समुझाय ।
पाती लेके धावन चलभयो और दिल्ली की पकड़ी राह ॥
घंटा चौबिस के अरसे में धावन दिल्ली पहुचो आय ।
जाय के पाती दई दफ्तर में इरविन पाती लई उठाय ॥
पाती बांचत परलय होइगे मनमें गये सनाका खाय ।
तार मिलाय दिया लन्दन से सगरी खबर दीन पहुचाय ॥
तीन दिना तक सोचे इरविन फिरपाती का लिखो जवाब ।
कछुक दिना की मोहलत दैदो नहीं तो जइहैं काम नसाय ॥
हलहु दमन फिर कसके करबे तुमका लेबे कैद कराय ।

इतनी बात लिखी इरविन ने औ पाती को दिया पठाय।
यहां कि बाते यहीं रहगई अब गांधी का सुनो हवाल॥
पाती बाँची जब गांधी ने नैना लाल बरन होइ जाय।
खूर बुलाय लिये आश्रम के सबको पाती दई सुनाय॥
करो तयारी अब जुद्धन की यारो सुनलो कान लगाय।
जितने योधा हैं आश्रम में सबसे बोल कहो समझाय॥
जिन्हे प्यारा हो घर अपना वह सब घर में बैठे जाय।
जिन्हे पियारी भारत माता वे सब चलें हमारे साथ॥
इतनी सुनके योधा गरजे फेरन लगे मूछ पर हांथ।
दुखी हमारी भारत माता हम सब चलब तुम्हारे साथ॥
हो गई त्यारी रण खेतन की भरती होन सिपाही लाग।
पहिले डंका के बाजत ही सैनिक करन तयारी लाग॥
बरदी पहन लई खद्दर की कर में झंडा लियो उठाय।
दुसरो डंका जबही बाजो सैनिक बाँध लियो हथियार॥
बाई कांट की लई कमनियां तकुली लीना बाँण बनाय।
चक्र सुदर्शन चरखा लैलो सत्याग्रह की बाँधी ढाल॥
बड़ी २ तोपें कर बन्दी की सो चरखिन पर दई धराय।
सहन शीलता घोड़ा कसके सैनिक फांद भये असवार॥
तीजो डंका जबहो बाजो लसगर कूच दीन करवाय।
आगे २ चले गांधी पाछे चलो सकल परिवार।
ताके पीछे चले शूरमा सोभा बरन करीना जाय॥

लशकर चल भयो साबरमति से औ डंडी की पकड़ी राह।
गांव २ में डेरा डाके सबको लेकचर दियो सुनाय॥
माल बिदेशी को मत छुइयो घर २ चरखा लेय चलाय।
चरखा कातके सूत निकालो बाको खद्दर लेय बुनाय॥
कुरता धोता हो खद्दर की टोपी दुपट्टा खद्दर क्यार।
लहगा लुगरा हो खद्दर की कुरती बने मेहरियन क्यार॥
नोन बनाओ घर अपने में सबको हिम्मत दई बताय।
ताड़ी दारू नशा छोड़ दो भांग चरस को देव भगाय॥
बिरवा काट देव ताड़ी के मदिरा भट्टी देव नशाय।
जंगल फूको भांगन के रे गांजा आप नष्ट हो जाय॥
देव अफीम काढ़ निज घरसे चरस का चरसा देव उड़ाय।
बात हमारी इतनी मानो कर बन्दी को हो तय्यार॥
फूट उठाय देव आपस की सब मिल चलो एकही साथ।
पास अदालत के मत जाओ इतनी मानो बात हमार॥
भर्ती हो जाओ सेवा दलमें भेद भाव सब देव मिटाय।
हिंदू मुसलमान ईसाई सब मिल चलो एकही साथ॥
एकही रस्ता से सब आये जाने की एकही राह।
पैदा भये सबही भारत में भारत सबको रही पुकार॥
पुत्र कहावत हो भारतके भारत होगा देश तुमार।
तुमरे जीवत दुखिया भारत तुम्हरे जीवन को धिक्कार।
आंख उठा कर उनको देखो जो भारत पै भये निसार॥

वीर गोखले तिलक होगये औ हो गये दास सी० आर० ।
दादा भाई नौरो जी भये औ हो गये लाजपत राय ॥
वीर प्रताप शिवाजी हो गये नानराव तातिया राव ।
लक्ष्मी रानी झाँसी वाली जाको जाने सकल जहान
ऐसे योधा बहुतक हो गये कहां लों तुम्हे गिनाऊं नाम ।
नाम अमर है उन वीरन का वह तो सुरपुर गये सिधार ॥
यही भूमि में तुम प्रकटे हो काहे बैठ रहे मन मार ।
करत गुलामी बहुदिन हो गये अब तो देखो आँख पसार ॥
आप के कूदो रण खेतन में बेड़ी तोड़ गुलामी केर ।
जो मर जइथो खटिया ऊपर जगमें कोऊ न लेवे नाम ॥
जो मरि जइहो रण खेतन में तुम्हरो नाम अमर होइ जाय ।
देश २ के नेता मिलके वह उपदेश देन सब लाग ॥
नाम लिखाय लेव कांग्रेस में इतनी मानो बात हमारि ।
बन्द बजार करो रिश्वत का और बेगार को देव हटाय ॥
बन्द लगान करो सरकारी ना कोई करसे देव छदाम ।
रिश्ता छोड़ो गवरमेंट से और कांग्रेस का पकड़ो हांथ ॥
लाल पगड़िया नौकर साही यह सब भइया लगे हमार ।
खुदगर्जी आधे होगये अपनो दीनो धर्म नसाय ॥
लहू निहत्थन के मारत हैं देखो धरसाना गुजरात ।
सोला पुरकी सुनो हकीकत किस्सा सुनो लखनऊ केर ॥
घोड़ा छाड़ दिये छातिन पर और गोलिन की दीनी मार ।
माता भारत को पिटवायो नन्हे बच्चा पिटे हजार ॥

लाठी डार गुदमें दीन्ही और पोलन को दियो दबाय ।
फेर घसीटो कांलन ऊपर कीने बहु तक अत्याचार ॥
अत्याचार सहे सेनाने जो कुछ कीने पुलिस गवार ।
हल्ला मचगयो भारत भरमें लागी कमेटी करन विचार ॥
गाव २ मे बनी कमेटी मेम्बर बनो सकल परिवार ।
बाईकाट करो कौंसल का माल न लेव बिदेसिन क्यार ॥
जितने नौकर हैं सरकारी और नसल के ठेकेदार ।
राय बहादुर खान बहादुर जेते हैं खुसिया सरदार ॥
जिसला थोड़ो इन पापिन से करदो सोसल बाईकाट ।
बहू न भेजो अपने घरसे औ बिटिया को देव भुलाय ॥
नाई हजामत नही बनावे ना धोबी कपड़ा लैजाय ।
रिस्तेदार पास ना बैठे मिलेना भाई बिरादर क्यार ॥
ऐसे लड़ो जो खुदगर्जन से बेशक होइये जीत तुम्हार ।
इतनी बात सुना वीरो ने करमें झंडा लियो उठाय ॥
बाईकाट की लई कमलियाँ बांधी सत्याग्रह की ढाल ।
तोप लगाई लेकचर वालो गोला गिरन दना दन लाग ॥
बड़े २ बोध माडरेट थे सो अब देन इस्तीफा लाग
छोड़ असम्बली मालवीय जी करने लगे देश का काम ॥
कुर्सी छोड़ी जब विट्ठल ने दुर्दिन बहुत रहे पछिताय ।
नाम गिनाऊ कहाँ लो इनके कौंसल आये मालवी साथ ॥

बाकी जोधा देखे हैंगे औ कुछ सोच रहे मन माय।
दिना चार मैं बोह्व भइहैं अवसर देख समय अनुसार॥
दौरा करके मालवी बोले दादा सुनलो बात हमार।
अबकी समैया जो कोई चूके बाको थूकेगा संसार॥
बेट कुल्हाड़ा के तुम बनके मुह मैं करखा रहे लगाय।
जो तुम चाहो भला देश का इस्तीफा अब देव पठाय॥
बनो मेम्बर काँगैस दलके तुम्हरे पाप नष्ट होइ जाय।
धरम नदूजा इससे बढ़कर देखो चाहे बेद कुरान॥
स्वराज्य मिलबे से ना रहि है बतिया कहिबे को रहिजांय
इतनी बात मालबी बोले सगरो हाल कह्यो समुझाय॥
खड़ एक नजर गुजारो और दूसर को देखो राह।
भूल चूक जो यामें होवे ताको सज्जन लेव सुधार॥

पुस्तक मिलने का पता—

गनेशप्रसाद पितम्बर लाल बजाज

नौघड़ा कानपुर।

प्रम प्रिंटिंग प्रेस कानपुर।